संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं० ५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-ह्मचारिणी चर्या

3.5 V,1

…चारिणी-चर्या

[… कामसूत्र तथा कुछ अन्य धर्मग्रन्थों से
… नारीधर्म-सम्बन्धी शिक्षायें]

सार्वभौम-संस्कृत-प्रचार कार्यालय

वाराणसी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श-गृहिणी

श्रीमती मदनावती लाट

सम्भलपुर (उड़ीसा)

को

सहायता से प्रकाशित

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

संस्कृत-प्रचार-पुस्तकमाला सं० Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकचारिणी-चर्या

[वात्स्यायन कामसूत्र तथा कुछ अन्य धर्मग्रन्थों से
संकलित नारीधर्म-सम्बन्धी शिक्षायें]

174

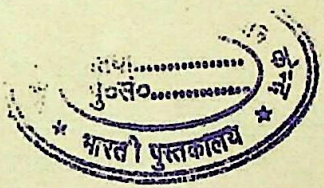

सम्पादक—
श्री वासुदेव द्विवेदी, वेदशास्त्री साहित्याचार्य
[सम्पादक-संस्कृत-प्रचार-पुस्तकमाला]

सार्वभौम-संस्कृत-प्रचार कार्यालय
वा रा ण सी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक—
सार्वभौम-संस्कृत-प्रचार कार्यालय
डी० ३८/२०, हौजकटोरा
वाराणसी (उ० प्र०)

संस्करण : द्वितीय
संख्या : एक हजार
मूल्य : पचास पैसा

मुद्रक—
बाँसफाटक
वाराणसी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

144

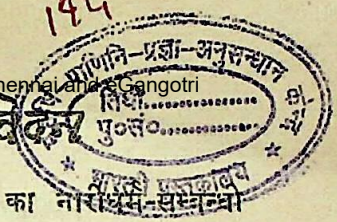

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक निवेदन

इस पुस्तक में वात्स्यायन कामसूत्र का नारीधर्म-सम्बन्धी एक पूरा अध्याय तथा मनुस्मृति, श्रीमद्भागवत, महाभारत एवं व्यासस्मृति आदि ग्रन्थों के कुछ और स्त्रीशिक्षोपयोगी श्लोक प्रकाशित किये जा रहे हैं। अन्त में श्री शिवजी, दुर्गाजी तथा तुलसीजी के पूजन की पद्धति और सूर्यार्घ चन्द्रार्घ आदि देने के मन्त्र भी दे दिये गये हैं। आशा है, इस पुस्तक से स्त्रियां अपने कर्तव्य को समझने और पूजापाठ करने में सहायता मिलेगी।

पुस्तक पढ़ने की रीति

कार्यालय का प्रधान उद्देश्य प्रत्येक हिन्दू नर-नारी को संस्कृत भाषा सिखाना है। अतः यहाँ से जो पुस्तकें प्रकाशित होती हैं वे इस दृष्टि से लिखी जाती हैं कि पाठक-पाठिकागण उन पुस्तकों के द्वारा धर्म आदि के ज्ञान के साथ साथ संस्कृतभाषा में भी प्रवेश कर सकें। अतएव प्रत्येक पाठक-पाठिका से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे इसी दृष्टि से इस पुस्तक को पढ़ने की कृपा करें। इसका तरीका यह है कि पहले वे सूत्रों एवं श्लोकों को शुद्ध शुद्ध पढ़ जायँ। यदि स्वयं ठीक ठीक न पढ़ सकें तो किसी संस्कृतज्ञ से पूछ कर ठीक कर लें। तत्पश्चात् उसकी हिन्दी पढ़ें। हिन्दी पढ़ते समय किस संस्कृत पद का क्या हिन्दी है इसे अच्छी तरह समझें और उसका स्मरण रक्खें। जो सूत्र और श्लोक उन्हें अधिक अच्छे मालूम पड़ें उन्हें कण्ठस्थ भी रक्खें। इस प्रकार पढ़ने से ज्ञान के साथ ही संस्कृत भाषा में भी सुविधा से प्रवेश हो सकेगा। आशा है पाठक पाठिकागण इस निवेदन पर अवश्य ही ध्यान देंगे।

आग्रहायणी पूर्णिमा
२०२४ वि०

विनीत
सम्पादक

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी-महिमा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

जहाँ स्त्रियों का आदर-सम्मान होता है वहाँ सभी देवता निवास करते हैं।

अपत्यं धर्म-कार्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा ।
दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्च ह ॥

सन्तानकी उत्पत्ति और उसका लालन-पालन, समस्त धर्म-कार्य, सेवा, उत्तम भोग-विलास तथा अपनी और पितरों की सद्गति यह सब काम स्त्रियों के ही अधीन होता है।

अर्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा ।
भार्या मूल त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः ॥

भार्या मनुष्य का आधा अङ्ग है, भार्या श्रेष्ठतम मित्र है, भार्या त्रिवर्ग का अर्थात् धर्म अर्थ काम का मूल है तथा भार्या ही सकटों से और संसार से भी पार होने का साधन है।

स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च ।
स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन् हि रक्षति ॥

स्त्री की सुरक्षा से ही मनुष्य अपनी सन्तान को, अपने चरित्र को, अपने कुल को, अपने को तथा अपने धर्म को भी सुरक्षित रख सकता है।

(मनुस्मृति-महाभारत)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचमन—आचमनीयं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
स्नान—स्नानीयं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
वस्त्र—वस्त्रं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
चन्दन—चन्दनं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
पुष्प—पुष्पाणि समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
धूप—धूपम् आघ्रापयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
दीप—दीपं दर्शयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
नैवेद्य—नैवेद्यं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
ताम्बूल—ताम्बूलं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
पूगीफल—पूगीफलं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।
दक्षिणा—दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः ।

हाथ में फूल लेकर नमस्कार—

कर्पूर - गौरं करुणाऽवतारं
संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानी-सहितं नमामि ॥

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं च यद् भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥

अथ दुर्गा-पूजनम्

संकल्पः

अद्य अमुकमा अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे मम इह जन्मनि आयुरारोग्य-सौभाग्य-सन्तति-सम्पत्ति-सद्बुद्धि-वृद्धयर्थं

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परलोके सद्गति-प्राप्तये च अहं यथोपस्थित-सामग्रीभिः श्रीदुर्गा-पूजनं करिष्ये ।

ध्यानम्—

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान्, शूल भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां, सर्वाङ्ग-भूषावृताम् ।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां, सेवे महाकालिकाम्
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो, हन्तुं मधुं कैटभम् ।।

पूजनम्—

पाद्य—पाद्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
अर्घ्य—अर्घ्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै ननः ।
आचमन—आचमनीयं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
स्नान—स्नानीयं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
वस्त्र—वस्त्रं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
चन्दन—चन्दनं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
सिन्दूर—सिन्दूरं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
पुष्प—पुष्पाणि समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
धूप—धूपम् आघ्रापयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
दीप—दीपं दर्शयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
नैवेद्य—नैवेद्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
ताम्बूल—ताम्बूलं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
पूगीफल—पूगीफलं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।
दक्षिणा—दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि श्रीदुर्गायै नमः ।

हाथ में फूल लेकर नमस्कार

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकालो कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकचारिणी-चर्या

(वात्स्यायन कामसूत्रकी नारीधर्म सम्बन्धी शिक्षायें)

(चतुर्थ अधिकरण, प्रथम अध्याय)

पति-भक्ति

१—भार्या एकचारिणी रूढ-विश्रम्भा देववत् पतिम् अनुवर्तेत।

एकचारिणी स्त्री[1] पति में अटल विश्वास रखती हुई उसे देव-तुल्य माने तथा उसी के अनुकूल अपना व्यवहार रक्खे।

परिवार-पालन

२—तन्मतेन कुटुम्ब-चिन्ताम् आत्मनि सन्निवेशयेत्।

पति की सम्मति से परिवार का भार अपने ऊपर ले (पति को अयोग्य समझ कर अथवा उसका विरोध करके नहीं अपितु उसकी अनुकूलता से)।

घरकी सफाई और सजावट

३—वेश्म च शुचि,

घरको सदा पवित्र और साफ-सुथरा रखना चाहिये।

१—पतिव्रता स्त्री को एकचारिणी कहते हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—सुसंमृष्ट-स्थानम्,

घरके प्रत्येक स्थान में झाड़ू लगा रहना चाहिये।

५—विरचित-विविध-कुसुमम्,

घरके भिन्न भिन्न स्थानों में फूलों से तरह तरह की रचनायें बनी रहनी चाहिएँ (यदि फूल न मिलें तो भिन्न भिन्न प्रकार के रंगों से चित्र विचित्र फूल बनाकर तथा चौक आदि पूर कर घर को सुशोभित बनाये रखना चाहिये)

६—श्लक्ष्ण-भूमितलम्,

घर के निचले भाग को सदा चिकना रखना चाहिये,

७—हृद्य-दर्शनम्,

घर को ऐसा बनाये रखना चाहिये जिसके देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाय,

८—त्रिषवणा-चरित-बलिकर्म,

तीनों सन्ध्या अर्थात् प्रातः मध्याह्न तथा सायंकाल बलिकर्म किया रहना चाहिये,

देव-पूजन

९—पूजित-देवायतनं कुर्यात्।

घर में जो देवता का मन्दिर या स्थान हो उसकी पूजा-अर्चा यथा समय करनी चाहिये।

१०—नहि अतोऽन्यत् गृहस्थानां चित्तग्राहकमस्तीति गोनर्दीयः।

---

३ संख्या से लेकर ९ संख्या एक ही सूत्र है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोनर्दीय आचार्य के मत में घर की सफाई और सुन्दरता से बढ़कर गृहस्थों के लिये प्रसन्नता की और कोई बात नहीं हो सकती।

परिवार के साथ यथोचित व्यवहार

११—गुरुषु, भृत्यवर्गेषु, नायक-भगिनीषु तत्पतिषु च यथार्हं प्रतिपत्तिः।

गुरुजन (सास-ससुर आदि) भृत्यवर्ग (नौकर चाकर) नायक भगिनी—पति की बहन (ननद) और ननदोई इनके साथ यथोचित व्यवहार रक्खे।

खेती तथा बाग-बगीचे की व्यवस्था

१२—परिपूतेषु च हरितशाक-वप्रान्, इक्षुस्तम्बान्, जीरक-सर्षपाऽजमोद-शतपुष्पा-तमाल-गुल्माँश्च कारयेत्।

जहाँ किसी प्रकार की गन्दगी न हो ऐसे स्थानों में क्यारी बनाकर हरे हरे शाक, ईख, जीरा, अजवाइन, सौंफ तथा पान आदि लगवावे।

१३—कुब्जकाऽमलक-मल्लिका-जाती-कुरण्टक-नवमालिका-तगर-नन्द्यावर्त-जपागुल्मान्,

घरके पास एक फुलवारी लगानी चाहिये जिसमें कुब्जक, आमलक (आँवला), मल्लिका, जाती, कुरण्टक, नवमालिका, तगर नन्द्यावर्त तथा जपा (अड़उल) आदि फूल के पौधे लगवावे,

१४—अन्याँश्च बहु-पुष्पान्,

और और प्रकार के भी फूलों को लगवावे।

१५—वालकोशीर-पातालिकाश्च,

वालक और उशीर आदि की क्यारी बनवावे। तथा—

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६—वृक्षवाटिकायां च स्थण्डिलानि मनोज्ञानि कारयेत् ।

बगीचे में सुन्दर सुन्दर वेदियों का निर्माण करावे ।

१७—मध्ये कूपं वापीं दीर्घिकां वा खानयेत् ।

वृक्षवाटिका (फुलवारी) के बीच में कूआँ, बावड़ी अथवा दीर्घिका (दिग्घी) बनवावे ।

दुष्ट स्त्रियों से संसर्ग न रखना

१८—भिक्षुकी-श्रमणा-क्षपणा-कुलटा-कुहकेक्षणिका-मूल-कारिकाभिः न संसृज्येत ।

भिक्षुकी (भिखमंगिन), क्षपणा, श्रमणा (संन्यासिनी) कुलटा (बदमास स्त्री), कुहका (इन्द्रजाल करनेवाली), ईक्षणिका (प्रश्न भाखने वाली) तथा मूलकारिका (वशीकरण जानने वाली) स्त्रियों से संसर्ग न रक्खे ।

रुचि-अरुचि तथा पथ्यापथ्य का ज्ञान

१९—भोजने च "रुचितम् इदम् अस्मै, द्वेष्यम् इदम्, पथ्यम् इदम्, अपथ्यम् इदम्" इति च विद्यात् त्यागोपादानार्थम् ।

भोजन के पदार्थों में पति के लिये कौन चीज रुचिकर है और कौन चीज अरुचिकर—तथा क्या पथ्य है और क्या अपथ्य इसे अच्छी तरह जाने और जानकर जो जो पदार्थ रुचिकर और हित-कर हों उनका संग्रह करे और जो जो पदार्थ अरुचिकर तथा अहितकर हों उनका परित्याग करें । (किस ऋतु में कौन कौन पदार्थ पथ्य होते हैं और कौन अपथ्य इसे आयुर्वेद तथा स्वास्थ्य की पुस्तकों से जानना चाहिये) ।

संख्या १३ से संख्या १६ तक एक सूत्र है ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति-परिचर्या

२०—स्वरं बहिरुपश्रुत्य भवनमागच्छतः "किं कृत्यम्" इति ब्रुवती सज्जा भवनमध्ये तिष्ठेत् ।

घर के बाहर से ही पति का शब्द सुनकर "क्या काम है" ऐसा कहे और काम करने के लिये घर में तैयार रहे ।

२१—परिचारिकामपनुद्य स्वयं पादौ प्रक्षालयेत् ।

परिचारिका (नौकरानी) को हटाकर स्वयं अपने हाथ से पति के पैरों को धोवे (यह प्रेम का सूचक है) ।

२२—नायकस्य च न विमुक्तभूषणं विजने सन्दर्शने तिष्ठेत् ।

एकान्त में पति के सामने भूषण (गहना) से रहित होकर न उपस्थित होवे ।

अपव्ययपर प्रतिबन्ध

२३—अतिव्ययम् असद्व्ययं वा कुर्वाणं रहसि बोधयेत् ।

यदि पति अतिव्यय (बहुत अधिक खर्च) करते हों अथवा असद्व्यय (खराब कामों में खर्च) करते हों तो उन्हें एकान्तमें समझावे ।

उत्सव आदिमें जाना आना

२४—आवाहे विवाहे यज्ञे गमनं, सखीभिः सह गोष्ठीं, देवताभिगमनम् इति अनुज्ञाता कुर्यात् ।

यदि किसीके घर विवाह यज्ञ आदिमें जाना हो, यदि कहीं सखियों के समाज में जाना हों और यदि कहीं देवता के दर्शन के

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये जाना हो तो पति की आज्ञा लेकर जाना चाहिये (बिना पूछे जहाँ तहाँ आने जाने से अनर्थ होने का भय रहता है)।

खेलकूद और मनोरञ्जन

२५—सर्वक्रीडासु च तदानुलोम्येन प्रवृत्तिः।

यदि और भी किसी स्त्रियों के खेलकूद अथवा आमोद प्रमोद में सम्मिलित होना हो तो भी पति की अनुकूलता देखकर ही सम्मिलित होवे।

शयन-जागरण

२६—पश्चात् संवेशनम्, पूर्वम् उत्थानम्, अनववोधनं च सुप्तस्य।

पतिके सोने के बाद सोना चाहिये और उठनेके पहिले उठना चाहिये। और पति सोते हों तो जगाना ठीक नहीं।

२७—महानसं च सुगुप्तं स्याद् दर्शनीयं च।

महानस (रसोईघर) को सुगुप्त (छिपा हुआ, सबके न घुसने योग्य) तथा दर्शनीय (देखने योग्य, सुन्दर) बनाये रक्खे।

पतिद्वारा गल्ती हो जाने पर

२८—नायकापचारेषु किञ्चित् कलुषिता नात्यर्थं निर्वदेत।

यदि पति द्वारा कोई अपराध (गल्ती) हो जाय तो बहुत अधिक नाराज न हो और बहुत ज्यादा खरी-खोटी न सुनावे।

२९—साधिक्षेपवचनं तु एनं मित्रजन-मध्यस्थम् एकाकिनं वापि उपालभेत,

यदि पतिके किसी अनुचित वर्ताव के कारण उन्हें उलाहना देना हो तो उनके मित्रों के सामने दे अथवा जब अकेले में बैठे हों तब।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादू. टोना, सौखैती आदि से अलग रहना

३०—न च मूलकारिका स्यात् ।

पति को अपने वश में करने के लिये मन्त्र तन्त्र आदि का प्रयोग न करे, न करावे (अर्थात् समझा बुझा कर ही अनुकूल करे) ।

३१—न हि अतोऽन्यत् अप्रत्यय-कारणमस्तीति गोनर्दीयः ।

गोनर्दीय आचार्य का कहना है कि मन्त्र तन्त्र और जादू-टोना आदि के फेर में पड़ने से उस स्त्री के प्रति लोगों का बहुत अविश्वास हो जाता है ।

कुछ वर्जनीय बातें

३२—दुर्व्याहृतं, दुर्निरीक्षितम्, अन्यतो मन्त्रणं, द्वारदेशाऽवस्थानं निरीक्षणं वा, निष्कुटेषु मन्त्रणं, त्रिवित्तेषु चिरम् अवस्थानम् इति वर्जयेत् ।

कटु और असभ्य वाणी बोलना, रूक्ष और क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखना, दूसरे पुरुष से सलाह करना, दरवाजे पर बैठना अथवा बैठे बैठे इधर उधर देखना, फुलवारी आदि में किसी के साथ गुप्त वार्ता करना, तथा एकान्त स्थान में देर तक ठहरना इन दुर्गुणों से स्त्रियों को दूर रहना चाहिये ।

शरीर की सफाई

३३—स्वेद-दन्तपङ्क-दुर्गन्धांश्च बुध्येत, एतद्धि विरागकारणम् ।

स्वेद (पसीना) दन्तपङ्क (दाँतका मैल) और शरीर-वस्त्र आदिका दुर्गन्ध इन से स्त्रियों को सावधान रहना चाहिये । क्यों

संख्या २९-३० एक सूत्र है ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि यह पति के विराग का कारण है। (इसलिये स्त्रियों को शरीर और वस्त्र की सफाई पर पूरा ध्यान देना चाहिये। बहुत स्त्रियाँ पानी के सुलभ होने पर भी स्नान आदि नहीं करतीं और कपड़ा साफ नहीं रखतीं। जिससे उनके शरीर और वस्त्र से बहुत दुर्गन्ध आती है। इस पर पूरा ध्यान देना चाहिये।

वेष-भूषा

३४—*बहुभूषणं, त्रिविधकुसुमानुलेपनं, विविधाङ्गराग-समुज्ज्वलं वेष इति आभिगामिको वेषः।

अनेक भूषण, अनेक प्रकार के कुसुमों की माला आदि, अनुलेपन, विविध प्रकार का अङ्गराग और समुज्ज्वल वेष यह पति के पास जाने का वेष है।

३५—प्रतनु-श्लक्ष्णाल्पदुकूलता, परिमिताभरणम्, सुगन्धिता, नात्युल्वणम् अनुलेपनम्, तथा शुक्लानि अन्यानि पुष्पाणि इति वैहारिको वेषः।

प्रतनु (पतला), श्लक्ष्ण (चिकना, मुलायम) और थोड़ा वस्त्र, इने गिने आभूषण, सुगन्धि, साधारण अनुलेपन तथा अन्यान्य श्वेत पुष्प यह विहार यात्रा आदि में जाने का वेष है।

व्रत-उपवास

३६—*नायकस्य व्रतम् उपवासं च स्वयमपि करणेन अनुवर्तेत।

पति जो व्रत उपवास आदि करते हों उनका स्वयं भी अनुकरण करे।

---

* संख्या ३४-३५ एक सूत्र है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७—वारितायाश्च न अहम् अत्र निबन्धनोया इति तद्व-
चसो निवर्तनम् ।

यदि पति रोकें तो "आप मुझे इस काम में न रोकें" ऐसा कह कर उनकी सम्मति ले ले।

सस्ता सामान खरीदना

३८—मृद्-विदल-काष्ठ-चर्म-लोह-भाण्डानां काले समर्घ-
ग्रहणम् ।

मिट्टी ,बाँस, काठ, चमड़ा तथा लोहा आदि के वर्तन जिस समय सस्ते दाम मे मिलें उस समय खरीद ले।

दुर्लभ वस्तुओं को सुरक्षित रखना

३९—तथा लवण-स्नेहयोश्च गन्धद्रव्य-कटुक-भाण्डौषधानां
च दुर्लभानां भवनेषु प्रच्छन्नं निधानम् ।

लवण (नमक), स्नेहद्रव्य (घी तेल आदि), गन्धद्रव्य (कस्तूरी आदि), कटुकभाण्ड (तुमडी आदि) तथा अन्य दुर्लभ औषधि इन पदार्थों को घर में छिपाकर रक्खे। (जिससे ये सामान विगड़ने न पावें और जल्दी खर्च न हों)।

साग-सब्जी लगाना

४०—मूलक-आलुक-पालङ्की-दमनक-आम्रातक - एर्वारुक-
त्रपुस-वार्ताकु-कूष्माण्ड-अलाबु-सूरण-शुकनास-स्वयं-
गुप्ता-तिलपार्णिक-अग्निमन्थ-लशुन-पलाण्डु-प्रभृतीनां
सर्वोषधीनां च वीजग्रहणं काले वापश्च ।

---

* संख्या ३६ ३७ एक सूत्र है ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूली, आलू, पालक, दवँना, अमडा, ककड़ी, खीरा, भंटा, कुम्हड़ा, लौकी, सूरन, शुकनासा (सेमि), कवाछ, तिलपर्णिका, अग्निमन्थ, लहसुन, प्याज तथा और भी आवश्यक औषधियों का बीआ जुटाकर रखना चाहिये और उन्हें समय पर बोना चाहिये।

गोपनीय वस्तुओं और बातों का गोपन

४१—स्वयं च सारस्य परेभ्योऽनाख्यानम्,

अपने पास जो दुर्लभ और उत्तम पदार्थ हों उन्हें दूसरे को नहीं बतलाना चाहिये।

४२—भर्तृ-मन्त्रितस्य च।

पति के साथ जो सलाह की गई हो अथवा पति की जो गुप्त बातें हों उन्हें भी दूसरों को न बतलावे।

गुणों में सब स्त्रियों से आगे रहना

४३—समानाश्च स्त्रियः कौशलेन, उज्ज्वलतया, पाकेन, मानेन तथा उपचारैः अतिशयीत।

अपने बराबरी की जो स्त्रियाँ हों उनसे चतुराई में, शरीर वस्त्र और घर की सफाई में, सुन्दर रसोई बनाने में, इज्जत प्रतिष्ठा में तथा पति और सास ससुर की सेवा में आगे बढ़ी रहे (अपना सब काम सबसे अच्छा रक्खे)।

वार्षिक आय-व्यय की गणना

४४—सांवत्सरिकम् आयं संख्याय तदनुरूपं व्ययं कुर्यात्।

वार्षिक (सालाना) आमदनी का हिसाब लगाकर तदनुकूल खर्च करे (इससे ऋण नहीं होने पावेगा)।

संख्या ४१-४२ एक सूत्र है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घी आदि का संग्रह

४५—*भोजनावशिष्टात् गोरसात् सारग्रहणम्,

जो गोरस (दूध, घी) भोजन से बच जाय तो उससे घी आदि निकाले।

४६—तथा तैलगुडयोः,

तेल और गुड़ का भी बनाना और उसको भिन्न भिन्न काम में लाना जाने।

सूत की कताई-बुनाई

४७—कार्पासस्य च सूत्रकर्तनम्,

कपास का सूत कातना जाने।

४८—सूत्रस्य वानम्,

सूत से कपड़ा बीनना जाने।

उपयोगी वस्तुओं का संग्रह

४९—शिक्य-रज्जु-पाश-वल्कल-संग्रहणम्,

छींका (सिकहर), डोर, पास तथा वल्कल (बोकला) आदि का बनाना तथा संग्रह करना जाने।

किसी वस्तु की हानि न होने देना

५०—कुट्टन-कण्डनावेक्षणम्,

कूटने छाँटने आदि की विधि जाने और उसकी देख भाल करे।

५१—आचाम-मण्ड-तुष-कण-कुटचङ्गाराणाम् उपयोजनम्,

आचाम (पीने लायक वस्तु), मण्ड (माड़), तुस (भूसी), कण (खुदी), कुटी (कुट्टी), अङ्गार (कोयला) इनको भिन्न भिन्न काम में लावे—नुकसान न करे।

---

* संख्या ४५ से ५५ तक एक सूत्र है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भृत्यों का भरण-पोषण

५२—भृत्य-वेतन-भरण-ज्ञानम्,

नौकरों के वेतन देने और उनके भरण-पोषण की विधि जाने।

सवारी आदिकी सुव्यवस्था

५३—वाहन-विधियोगाः,

वाहन (सवारी) रखने तथा उनके खाने-पीने और मरम्मत आदि के रखने की विधि जाने।

पशुपक्षियों से प्रेम और उनकी देखभाल

५४—मेष--कुक्कुट--लावक--शुक--सारिका-परभृत--मयूर-वानर-मृगाणाम् अवेक्षणम्,

मेष (भेड़), कुक्कुट (मुर्गा), लावक (बटेर), शुक (सुग्गा), सारिका (मैना), परभृत (कबूतर), मयूर (मोर), वानर, मृग (हरिन) यह सब यदि घर में पोषे गये हों तो उनको खिलाना पिलाना और देखरेख करना जाने।

दैनिक आय-व्यय की गणना

५५—दैवसिकाय-व्यय-पिण्डीकरणम् इति च विद्यात्।

प्रतिदिन जितनी आमदनी और खर्च हो उसका हिसाब लगाना भी जाने।

फटे पुराने कपड़ोंका सदुपयोग

५६—तज्जघन्यानां च जीर्णवाससां सञ्चयः,

पति तथा और घर के लोगों के फटे पुराने कपड़ों को इकट्ठा करके रखना चाहिये, उन्हें फेंकना नहीं चाहिये।

५७—तैः विविधरागैः शुद्धैर्वा कृतकर्मणां परिचारकाणाम् अनुग्रहो मानार्थेषु च दानम्,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने कपड़ों को विविध रङ्गों में रंग कर अथवा बिना रंगे ही धुलाकर घर में काम करने वाले नौकर नौकरानियों को प्रसन्न रखने के लिये तथा उनका मान बढ़ाने के लिये देवे।

५७—अन्यत्र वा उपयोगः।

अथवा दूसरे दूसरे काम में लावे। जैसे—घर लीपने के लिये, लालटेन आदि साफ करने के लिये, दीया की बत्ती बनाने के लिये तथा कुछ सामान बाँध कर रखने के लिये या भिखमंगे आदि को देने के लिये।

सिर्का अँचार आदि का निर्माण और सुरक्षा

५९—सुराकुम्भीनाम् आसवकुम्भीनां च स्थापनं, तदुपयोगः क्रय-विक्रयाऽय-व्ययाऽवेक्षणम्।

घड़ों में सुरा (मदिरा) तथा आसव आदि बनाकर रक्खे, उनको समय समय पर काम में लावे, उनको खरीदे और बेंचे तथा उनकी आमदनी और खर्च का हिसाब रक्खे। (ब्राह्मण की स्त्री को मदिरा नहीं बनाना चाहिये। सिर्का अँचार आदि तो बनाकर रखना ही चाहिये)।

पतिके मित्रों का स्वागत-सत्कार

६०—नायकमित्राणां च स्रगनुलेपन-ताम्बूलदानैः पूजनं न्यायतः।

यदि पतिके मित्र घर पर आ जाँय तो उनका फूल-माला अनुलेपन तथा पान कसैली आदि से उचित सत्कार करे (ऐसा नहीं कि मारे लाज के कुछ पूछे ही नहीं और मित्र जी सीधे लौट

संख्या ५६ से ५८ तक एक सूत्र है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाँय। यदि स्वयं न हो सके तो किसी दूसरे के द्वारा तो सत्कार करा ही देना चाहिये)।

सास-ससुर आदि की सेवा और सम्मान

६१—श्वश्रू-श्वसुर-परिचर्या,

सास ससुर आदि श्रेष्ठ जनों की उचित सेवा-सत्कार करे।

६२—तत्पारतन्त्र्यम्,

सास ससुर आदि की आज्ञा में रहे।

६३—अनुत्तर-वादिता,

उनको जबाब न दे।

हँसने-बोलने में संयम

६४—परिमिताऽप्रचण्डाऽलापकरणम्,

परिमित (थोड़ा) तथा अप्रचण्ड (मधुर) आलाप (बात-चीत) करे।

६५—अनुच्चैर्हासः,

बहुत जोर से न हँसे।

समदर्शिता

६६—तत्-प्रियाप्रियेषु स्वप्रियाप्रियेषु इव वृत्तिः,

अपने प्रिय-अप्रिय की भाँति ही उनके प्रिय-अप्रिय को भी जाने।

अभिमान-हीनता

६७—भोगेषु अनुत्सेकः,

अधिक भोग-सामग्री होने पर उसका घमण्ड न करे।

संख्या ६० से लेकर ७१ तक एक सूत्र है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिजनों के साथ उदारता

६८—परिजने दाक्षिण्यम्,

परिजनों अर्थात् नौकर चाकरों और घर के अन्य लोगों के साथ उदार व्यवहार रक्खे।

६९—नायकस्य अनिवेद्य न कस्मैचिद् दानम्,

पति की बिना राय लिये किसी को कुछ न दे।

नौकरों की देख रेख और उनका सम्मान

७०—स्वकर्मसु भृत्यजन-नियमनम्,

नौकरों को अपने-अपने काम में लगावे और सावधान रक्खे।

७१—उत्सवेषु च अस्य पूजनम्।

यदि घर में विवाह, यज्ञ आदि कोई उत्सव हो तो उस समय नौकरों का अधिक सत्कार करे (अर्थात् नवीन वस्त्र आदि देवे)।

इति एकचारिणीवृत्तम्

यह एक चारिणी स्त्रियों के नियम हैं।

× × × ×

अथ प्रवासचर्या

पति के परदेश चले जाने पर स्त्रियों के आहार-विहार में कुछ परिवर्तन होने चाहिये। इस अवस्था के नियम निम्नाङ्कित हैं—

७२—प्रवासे च मङ्गलमात्राभरणा देवतोपवासपरा वार्तायां स्थिता गृहान् अवेक्षेत।

यदि पति परदेश में रहें तो मङ्गल-सूचनार्थ थोड़ा आभूषण पहने, देवपूजन तथा व्रत उपवास में लगी रहे और पति के कुशल समाचार को (पत्र आदि से) जानती हुई घर के कामकाज को देखे-सम्भाले।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७३—शय्या च गुरुजनमूले ।

सास जेठानी आदि श्रेष्ठ जनों के पास ही सोवे ।

७४—तदभिमता कार्यनिष्पत्तिः ।

उनकी आज्ञा से ही सब काम करे ।

७५—नायकाभिमतानां च अर्थानाम् अर्जने प्रतिसंस्कारे च यत्नः ।

जो पदार्थ या काम पति को प्रिय हों उनके संग्रह तथा सत्कार में लगी रहे ।

७६—नित्य नैमित्तिकेषु कर्मसु उचितो व्ययः ।

जो काम नित्य होते हैं और जो काम किसी विशेष अवसर पर किये जाते हैं उनमें उचित खच करे । नित्य काम—जैसे भोजन आदि, नैमित्तिक काम जैसे यज्ञ, पूजा आदि ।

७७—तदारब्धानां च कर्मणां समापने मतिः ।

पति जो काम आरम्भ कर गये हों—जसे मन्दिर आदि बनवाना, स्कूल-पाठशाला चलाना, कोई और धर्मकार्य आदि करना उन्हें पूरा करने का विचार रक्खे ।

७८—[१]ज्ञातिकुलस्य अनभिगमनम् अन्यत्र व्यसनोत्सवाभ्याम् ।

मरण आदि दुःख तथा विवाह आदि उत्सव के अतिरिक्त बिना कारण जाति भाइयों के घर न जावे ।

---

* संख्या ७३ से ७५ तक एक सूत्र है ।

× ७६–७७ एक सूत्र है ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७९—तत्रापि नायक-परिजनाधिष्ठिताया न अतिकालम् अवस्थानम् ।

वहाँ भी पति के परिजनों के साथ जावे, तथा अधिक देर तक न ठहरे (जितनी देर तक आवश्यकता हो उतनी ही देर तक ठहरे) ।

८०—अपरिवर्तित-प्रवासवेषता च ।

प्रवासोचित वेष का परिवर्तन न करे ।

८१—गुरुजनाऽनुज्ञातानां करणम् उपवासानाम् ।

वही व्रत उपवास आदि करे जिस पर सास ससुर आदि की अनुमति हो । (अपने मन से या हठ से न करे) ।

८२—[1]परिचारकैः शुचिभिः आज्ञाधिष्ठितैः अनुमतेन क्रयविक्रय-कर्मणा सारस्यापूरणम् ।

पवित्र बिचार वाले तथा आज्ञानुसार चलने वाले परिजनों की राय से क्रय-विक्रय (खरीद-बिक्री द्वारा गृहोपयोगी आवश्यक वस्तुओं का संग्रह करे) ।

८३—तनूकरणं च शक्त्या व्ययानाम् ।

जहाँ तक हो सके खर्च कम करे ।

८४—[2]आगते च प्रकृतिस्थाया एव प्रथमतो दर्शनम् ।

परदेश से पति के आ जाने पर उसी वेष से पति का प्रथम दर्शन करे ।

१—संख्या ७८ से ८० तक एक सूत्र है । २—८२-८३ एक सूत्र है ।

२

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८५—दैवतपूजनम्, उपहाराणां च आहरणम् ।

देवता का पूजन करे तथा उपहार चढावे ।

धर्मम् अर्थं च कामं च लभन्ते स्थानमेव च ।
निःसपत्नं च भर्तारं नार्यः सद्-वृत्तमाश्रिताः ।।

जो नारियाँ ऊपर लिखे हुए सदाचारों तथा नियमों का पालन करती हैं वे धर्म, अर्थ (धन-दौलत) काम (सुख तथा भोग-विलास) और स्थान (समाज में इज्जत-प्रतिष्ठा) पाती हैं और उनके पति भी सदा उनके अनुकूल और प्रसन्न रहते हैं ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अन्य धर्मग्रन्थों से संकलित नारी-धर्म-सम्बन्धी शिक्षायें

मनुस्मृति में नारीधर्म

बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता ।
न स्वातन्त्र्येण कर्तव्यं किञ्चित् कार्यं गृहेष्वपि ।।

स्त्री बाला हो, युवती हो अथवा वृद्धा हो किसी अवस्था में उसे बिलकुल स्वतन्त्र होकर घर का भी काम नहीं करना चाहिये।

बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने ।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम् ।।

स्त्री को बालकपन में पिता के वश में रहना चाहिये, यौवन में पति के वश में रहना चाहिये और पति के मर जाने पर पुत्रों के वश में रहना चाहिये। स्त्री के लिये कभी भी सर्वथा स्वतन्त्र रहना अच्छा नहीं।

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया ।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्त-हस्तया ।।

स्त्री को सदा प्रसन्न रहना चाहिये, घर के काम-काज में खूब चतुर होना चाहिये, घर के सब सामान को अच्छी तरह साफ़-सुथरा रखना चाहिये और हाथ खोलकर खर्च नहीं करना चाहिये।

---

३ ८४-८५ एक सूत्र है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्मै दद्यात् पिता त्वेनां भ्राता वानुमते पितुः ।
तं शुश्रूषेत जीवन्तं संस्थितं च न लङ्घयेत् ॥

पिता अथवा पिता की सम्मति से भाई जिस पुरुष के साथ स्त्री का विवाह कर दे उसकी जीवन भर सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिये और उसके मर जाने पर पुनः दूसरा विवाह नहीं करना चाहिये।

(अ० ५, १०७-१४८, १५०-१५१,)

याज्ञवल्क्यस्मृति में नारीधर्म

मृते जीवति वा पत्यौ या नान्यमुपगच्छति ।
सेह कीर्तिमवाप्नोति मोदते चोमया सह ॥

(अ० १ श्लो० ७५)

जो स्त्री पति के जीते हुए अथवा मर जाने पर दूसरे पुरुष के साथ सम्बन्ध नहीं करती वह इस लोक में सर्वत्र यश प्राप्त करती है और मर जाने पर स्वर्गमें पार्वतीजी के साथ आनन्द करती है।

श्रीमद्भागवत में नारीधर्म

स्त्रीणाञ्च पतिदेवानां तच्छुश्रूषाऽनुकूलता ।
तद्बन्धुष्वनुवृत्तिश्च नित्यं तद्-व्रतधारणम् ॥

पति को देवता समझने वाली स्त्रियों का धर्म यह है—

तत्-शुश्रूषा—पतिकी सेवा-शुश्रूषा तथा आदर-सत्कार करना,

अनुकूलता—सुख और दुःख में पति के अनुकूल रहना।

तद्बन्धुषु अनुवृत्तिः—पति के भाई-बन्धुओं के साथ प्रेम तथा सद् व्यवहार रखना।

नित्यं तद्व्रतधारणम्—पति का जो नियम हो उसके अनुसार ही स्वयं भी आचरण करना।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मार्जनोपलेपाभ्यां गृह-मण्डन-वर्तनैः ।
स्वयञ्च मण्डिता नित्यं परिमृष्ट-परिच्छदा ॥

सम्मार्जन—घर द्वार आँगन आदि को बहार कर ठीक रक्खे, *उपलेप*—घर को लीप कर सुन्दर बनाये रहे, *गृहमण्डन-वर्तनैः*—बहारने और लीपने के सिवाय अन्य उपायों से भी घर को सुसज्जित रक्खे जैसे–दीवालों को रंग कर, दीवालों में विविध प्रकार की चित्रकारी कर, घर में देवी-देवताओं तथा साधु-महात्माओं, विद्वानों और नेताओं के चित्र लटका कर तथा चौक पूर कर। *स्वयंच मण्डिता नित्यम्*—अपने शरीर को भी सुन्दर वस्त्र तथा भूषणों से सुशोभित रक्खे। *परिमृष्ट-परिच्छदा*—घर के सब सामानों को जैसे—बर्तन, खाट, चौकी, कुर्सी, पेटी, जाँत, ओखर-मूखल आदि को बराबर साफ-सुथरा रक्खे।

कामैरुच्चावचैः साध्वी प्रश्रयेण दमेन च ।
वाक्यैः सत्यैः प्रियैः प्रेम्णा काले काले भजेत् पतिम् ॥

साध्वी—पतिव्रता स्त्री को चाहिये कि *उच्चावचैः कामैः*—तरह तरह के पदार्थों द्वारा, *प्रश्रयेण*—नम्रता से, *दमेन*—शान्ति से, *सत्यैः प्रियैः वाक्यैः*—सत्य और प्रिय वचनों से, *प्रेम्णा*—प्रेम से सदा पति की सेवा करे।

सन्तुष्टाऽलोलुपा दक्षा धर्मज्ञा प्रिय-सत्यवाक् ।
अप्रमत्ता शुचिः स्निग्धा पतिं त्वपतितं भजेत् ॥

(सप्तम स्कन्ध अ० ११)

स्त्री को चाहिये कि *सन्तुष्टा*—सदा सन्तुष्ट रहे, *अलोलुपा*—लालची न हो, *दक्षा*—घर के सब काम-काज में चतुर हो, *धर्मज्ञा*—क्या धर्म है और क्या अधर्म है इसको ठीक-ठीक जाने,

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय-सत्य-वाक्—प्रिय और सत्य वचन बोलने वाली हो, *अप्रमत्ता*—किसी काम में लापरवाही न करे, सब काम सावधानी से करे, *शुचिः*—शरीर, वस्त्र और मन-वाणी से पवित्र रहे, *स्निग्धा*—प्रिय और मधुर व्यवहार रक्खे तथा *अपतितं पतिं भजेत्*—जो पति पतित अर्थात् पापी न हो उसकी सेवा करे। यदि पति से कोई बड़ा पाप हो जाय तो वह जब तक प्रायश्चित करके शुद्ध न हो जाय तब तक उससे व्यवहार वर्जित रक्खे।

व्यास स्मृति में नारीधर्म

प्रमादोन्माद रोगेर्ष्या-वञ्चनं चातिमानिताम्।
पैशुन्य–हिंसा–विद्वेष -महाहङ्कार - धूर्तताः ॥
नास्तिक्य-साहस-स्तेय-दम्भान् साध्वी विवर्जयेत् ॥

(अ० २ श्लो० ३५)

प्रमाद (असावधानी करना) *उन्माद* (पागल की तरह बोलना और काम करना) *रोष* (क्रोध करना) *ईर्ष्या* (किसी की उन्नति देखकर कुढ़ना) *वञ्चन* (धोखा देना) *अतिमानिता* (अभिमान करना) *पैशुन्य* (चुगली करना—झगड़ा लगाना—यहाँ की बात वहाँ और वहाँ की बात यहाँ कहना) *हिंसा* (किसी को कष्ट पहुँचाना—तकलीफ देना—जादू टोना करके किसी को मारना) *विद्वेष* (वैर रखना) *महाहङ्कार* : बहुत घमण्ड करना—अपनी जाति, धन, भूषण, रूप, सौभाग्य आदि का घमण्ड करना) *धूर्तता* (धूर्तई करना, छल कपट रखना) *नास्तिक्य* (ईश्वर और परलोक को न मानना) *साहस* (अपने बल औरबुद्धि से अधिक काम करना और अधिक बातें करना) *स्तेय* (चोरी करना—घरका अन्न-पानी चुराना—बेंचना आदि)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दम्भ (पाषण्ड करना, दिखावटी काम करना, ये सब स्त्रियों के लोक-परलोक विगाड़ने वाले दोष हैं। इनके कारण ही घर में बराबर झगड़ा भी होता रहता है। अतः कुलीन स्त्रियों को इन दोषों से सदा दूर रहना चाहिये।

नारीधर्म सम्बन्धी सुभाषित

स्वातन्त्र्यं, पितृमन्दिरे निवसतिः, यात्रोत्सवे सङ्गतिः
गोष्ठी पूरुष-सन्निधौ, अनियमो वासो विदेशे सदा।
संसर्गः सह पुंश्चलोभिरसकृत् वृत्तेर्निजायाः क्षतिः
पत्युर्वार्धकमीर्षितं प्रवसनं नाशस्य हेतुः स्त्रियाः॥

पञ्चतन्त्र

१—*स्वातन्त्र्यम्*—सदा स्वतन्त्र रहना, किसी का शासन न मानना,
२—*पितृमन्दिरे निवसतिः*—बराबरपिता के घर रहना,
३—*यात्रोत्सवे सङ्गतिः*—यात्रा और उत्सव आदि में विशेष कर आना-जाना,
४—*गोष्ठी पूरुष-सन्निधौ*—पुरुषों के साथ बैठकी करना,
५—*अनियमो वासो विदेशे सदा*—विशेष रूप से विदेश में रहना, अथवा जब चाहे तब विदेश में रहना,
६—*पुंश्चलीभिः सह असकृत् संसर्गः*—पुंश्चली अर्थात् बदमाश स्त्रियों के साथ ज्यादा संसर्ग रखना,
७—*निजायाः वृत्तेः क्षतिः*—अपनी जीविका का नाश हो जाना,
८—*पत्युः वार्धकम्*—पति का वृद्ध हो जाना,
९—*ईर्षितं प्रवसनम्*—ईर्षा से (क्रोध से) बाहर निकल जाना,

ये सब दोष स्त्रियों के बिगड़ जाने के कारण हैं। अतः कुलीन स्त्रियों को इन दोषों से बचे रहना चाहिये और अपनी लड़कियों को भी बचाये रहना चाहिये।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलीन स्त्रियों के कर्तव्य

भक्तिः प्रेयसि, संश्रितेषु करुणा, श्वश्रूषु नम्रं शिरः
प्रीतिर्ज्ञातिषु, गौरवं गुरुजने, क्षान्तिः कृतागस्यपि ।
अम्लानः कुलयोषितां व्रतविधिः सोऽयं विधेयः पुनः
मद्भर्तुर्दयिता इति प्रियसखीवृत्तिः सपत्नीष्वपि ॥

(सुभाषित संग्रह)

१—*प्रेयसि भक्तिः*—पति में भक्ति और प्रेम रखना,
२—*संश्रितेषु करुणा*—अपने आश्रित नौकर-नौकरानियों पर कृपा रखना,
३—*श्वश्रूषु नम्रं शिरः*—सास-ससुर के सामने नम्र होकर रहना,
४—*ज्ञातिषु प्रीतिः*—भाई-बन्धुओं में प्रेम रखना,
५—गुरुजने गौरवम्—अपने से जो बड़े हों उनका आदर करना,
६—कृतागस्यपि क्षान्तिः—किसी से कुछ अपराध हो जाने पर भी क्षमा कर देना,
७—मद्भर्तुः दयिता इति सपत्नीष्वपि प्रियसखीवृत्तिः—यदि सपत्नी (सौत) हो तो अपने पति की प्रिया समझ कर उसे प्रिय सखी के समान समझना,

ये सब कुलीन स्त्रियों के कर्तव्य हैं जिनके करने से उनकी प्रतिष्ठा होती है और लोक-परलोक बनता है।

लज्जाशील स्त्रियों का स्वभाव

पदन्यासो गेहाद् बहिरहि–फणाऽरोपण–समो
निजावासाद् अन्यद्भवनमपर–द्वीप–तुलितम् ।
वचो लोकाऽलभ्यं कृपण–धन–तुल्यं मृगदृशः
पुमान् अन्यः कान्ताद् विधुरिव चतुर्थी-समुदितः ॥

(सुभाषित संग्रह)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गेहात्—घर से—*बहिः*—बाहर *पदन्यासः*—पैर रखना *अहि-फणारोपण—समः* - सर्पके फन पर पैर रखने के समान होता है। *निजावासात्*—अपने घर से *अन्यद् भवनम्*—दूसरा घर *अपर-द्वीप-तुलितम्*—एक दूसरे द्वीप के समान दूर मालूम पड़ता है। उनका *वचः*—वचन *कृपण-धन-तुल्यं*—कृपण के धन के समान *लोकाऽलभ्यं*-अन्य लोगों के लिये अलभ्य होता है और *कान्तात्*—अपने पति से *अन्यः*—दूसरा *पुमान्*—पुरुष *चतुर्थी-समुदितः*—चौथ के *विधुः इव*—चन्द्रमा के समान होता है।

अभिप्राय यह है कि लज्जाशील स्त्रियाँ घर के बाहर नहीं निकलतीं, दूसरे लोगों के घर पर बहुत कम जाती हैं, उनकी बोली सब लोग नहीं सुन पाते और पति को छोड़कर पर पुरुष को देखना वे कलङ्क की बात समझती हैं।

पति के घर जाते समय शकुन्तला को महर्षि कण्व का उपदेश

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतयां मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

अभिज्ञान शाकुन्तलम् अं० ४ श्लो० १७

पति के घर में जो स्त्री या पुरुष श्रेष्ठ जन हों, उनकी सेवा करना। यदि कोई सपत्नी हो तो उसके साथ भी प्रिय सखी का व्यवहार रखना, सौतियाडाह का नहीं। पति के कभी अन्य-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनस्क या रुष्ट हो जाने पर तुम भी क्रोध न कर बैठना और विपरीत आचरण न करने लगना। दास-दासी आदि अनुचरों के साथ खूब दयालुता का व्यवहार करना तथा अपने ऐश्वर्य और विपुल सम्पदा के लिये कभी अभिमान न करना। समझो, कि इन्हीं विचारों और सुचरितों से स्त्रियाँ गौरवपूर्ण गृहिणी पद को प्राप्त करती हैं। और जो स्त्रियाँ इसके विपरीत आचरण करती हैं वे तो कुल का नाश ही कर डालती हैं।

कैसी स्त्रियों के पास लक्ष्मी रहती हैं ?

सत्यासु नित्य-प्रिय-दर्शनासु
सौभाग्ययुक्तासु गुणान्वितासु।
वसामि नारीषु, पतिव्रतासु
कल्याणशीलासु विभूषितासु ॥

लक्ष्मी जी कहती हैं कि जो स्त्रियाँ सदा सत्य बोलतीहैं, कभी झूठ नहीं बोलतीं, सर्वदा देखने में प्रसन्न मालूम पड़ती हैं, सौभाग्य से युक्त होती हैं, जिन स्त्रियों में सभी अच्छे अच्छे गुण होते हैं, जो पतिव्रता होती हैं, जिनका शील-स्वभाव विचार, आचार सब सुन्दर और मङ्गल होता है और जो वस्त्र एवं भूषण आदि से सुशोभित रहती हैं उन्हीं स्त्रियों के पास मैं रहती हूँ।

कैसी स्त्रियों के पास लक्ष्मी नहीं रहती हैं ?

प्रकीर्णभाण्डाम्, अनवेक्ष्य-कारिणीम्,
सदा च भर्तुः प्रतिकूल-वादिनीम्।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्य वेश्माभिरताम्, अलज्जाम्,
एवंविधां स्त्रीं परिवर्जयामि ॥

लक्ष्मी जी कहती हैं कि जो स्त्री अपने घर के बर्तनों और सामानों को इधर-उधर फेंके रहती है, जो स्त्री बिना सोचे-विचारे और बिना समझे-बूझे काम करती है, जो सदा पति के प्रतिकूल रहती है, जो बराबर दूसरे-दूसरे लोगों के घर आया-जाया करती है और जो लज्जा और संकोच से रहित होती है ऐसी स्त्री के पास मैं नहीं रहती हूँ।

(महाभारत अनु० अ० ११)

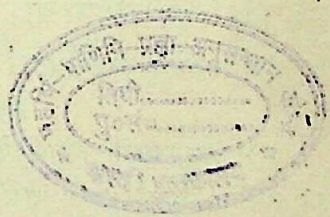

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त पूजा-पद्धति

प्रायः स्त्रियाँ समय समय पर शिवजी दुर्गाजी तथा तुलसीजी की पूजा किया करती हैं अतः यहाँ पर इन देवताओं के पूजन की संक्षिप्त विधि नीचे दी जा रही है। पहले किसी विद्वान् या विदुषी से पूछ कर इसे शुद्ध शुद्ध बाँचने का अभ्यास कर लेना चाहिये तथा अर्थ भी समझ लेना चाहिये।

अथ शिवपूजनम्

शरीर पवित्र करने का मन्त्र

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

संकल्पः

अद्य अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे मम इह जन्मनि आयुरारोग्य-सौभाग्य-सन्तति-सम्पत्ति-सद्बुद्धि-वृद्ध्यर्थं परलोके सद्गतिप्राप्तये च अहं यथोपस्थित-सामग्रीभिः श्रीमहेश्वरपूजनं करिष्ये।

ध्यानम्—

ध्याये नित्यं महेशं, रजतगिरि-निभं चारु-चन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं, परशु-मृगवराऽभीति-हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं, समन्तात् स्तुतममरगणैः, व्याघ्रकृत्ति वसानम्
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं, निखिल-भय-हरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

पूजनम्—

पाद्य—पाद्यं समर्पयामि श्री महेश्वराय नमः।
अर्घ्यं—अर्घ्यं समर्पयामि श्रीमहेश्वराय नमः।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरणागत - दीनार्त - परित्राण - परायणे ।
सर्वस्यातिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

अथ तुलसी-पूजनम्

संकल्प

अद्य अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे मम इह जन्मनि आयुरारोग्य-सौभाग्य-सन्तति-सम्पत्ति-सद्बुद्धि-वृद्ध्यर्थं परलोके सद्गतिप्राप्तये च अहं यथोपस्थितसामग्रीभिः श्री तुलसी-पूजनं करिष्ये ।

ध्यानम्

ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम् ।
प्रसन्नां पद्मवदनां वराऽभय - चतुर्भुजाम् ।।

पूजनम्

पाद्य—पाद्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
अर्घ्य—अर्घ्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
आचमन—आचमनीयं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
स्नान—स्नानीयं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
वस्त्र—वस्त्रं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
चन्दन—चन्दनं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
सिन्दूर—सिन्दूरं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
पुष्प—पुष्पाणि समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
धूप—धूपम् आघ्रापयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
दीप—दीपं दर्शयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
नैवेद्य—नैवेद्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
ताम्बूल—ताम्बूलं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूगीफल—पूगीफलं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।
दक्षिणा—दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि श्रीतुलस्यै नमः ।

हाथ में फूल लेकर नमस्कार

नमस्ते गार्हपत्याय नमस्ते दक्षिणाग्नये ।
नम आहवनीयाय तुलस्यै ते नमो नमः ॥
अभीष्ट-फल-सिद्धिं च सदा देहि हरिप्रिये ।
पत्युरायुश्च भाग्यं च कृपादृष्ट्या विलोकय ॥

सूर्यार्घ देने का मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घं दिवाकर ॥

चन्द्रार्घ देने का मन्त्र

क्षीरोदार्णव - सम्भूत अत्रिगोत्र - समुद्भव ।
गृहणार्घं मया दत्तं रोहिणी - सहित प्रभो ॥

प्रदक्षिणा करने का मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण-पदे पदे ॥

॥ इति ॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक व्यवहारोपयोगी संस्कृत वाक्य

[स्त्रियों से निवेदन है कि वे अपने परिवार के लोगों तथा विशेषकर अपने बाल-बच्चों से मातृ-भाषा के साथ इन वाक्यों का भी प्रयोग किया करें]

अस्ति–है
नास्ति–नहीं है
किम् अस्ति–क्या है
कुत्र अस्ति–कहाँ है
अत्र अस्ति – यहाँ है
तत्र अस्ति – वहाँ है
कः अस्ति – कौन है
किम् – क्या
किम् करोति – क्या करते हो
किम् इष्यते – क्या चाहिये
न इष्यते – नहीं चाहिये
किञ्चित् इष्यते – कुछ चाहिये
न किञ्चित् – कुछ नहीं
कथम् – कैसे
किमर्थम् – किसलिये
जानासि – जानते हो
जानामि – जानता हूँ
न जानामि – नहीं जानता हूँ
ओम् – हाँ
वाढम् – बहुत अच्छा
सुष्ठु, सम्यक् – ठीक
अलम् – बस

गम्यताम् – जाइये
आगम्यताम् – आइये
उपविश्यताम् – बैठिये
दीयताम् – दीजिये
गृह्यताम् – लीजिये
नीयताम् – ले जाइये
आनीयताम् – ले आइये
उद्घाट्यताम् – खोलिये
पिधीयताम् – बन्द कीजिये
क्रियताम् – कीजिये
पठ्यताम् – पढ़िये
लिख्यताम् – लिखिये
श्रूयताम् – सुनिये
उच्यताम् – बोलिये
कथ्यताम् – कहिये
आगच्छ – आओ
उपविश – बैठो
उत्तिष्ठ – उठो
आगच्छामि – आता हूँ
आनयामि – लाता हूँ
ददामि – देता हूँ
नमामि – नमस्कार करता हूँ

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं से विनम्र

सरलता, शीघ्रता और
सीखने के लिए तथा अपने बा
सिखाने के लिए कार्यालय द्वा
पोस्टरों को मँगाकर सभी
संस्कृत सीखें और अपने स
सिखावें यह उनसे विनम्र निवेद

यह ध्यान में रखने की बात है कि घर-घर में संस्कृत तथा संस्कृति की रक्षा एवं प्रचार के पुण्यकार्य में नारी-समाज का योगदान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक है और इसका अब अविलम्ब आरम्भ हो जाना चाहिये।

कृपया आज ही कार्यालय द्वारा प्रकाशित साहित्य की सूची मँगाने के लिये पत्र लिखें—

पता—

व्यवस्थापक

सार्वभौम-संस्कृत-प्रचार कार्यालय

डी० ३८/२०, हौज कटोरा, वाराणसी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.